मध्यकालीन मिथिला का भूगोलः वर्णरत्नाकर के आधार पर

शिव कुमार मिश्र*

पं. ज्योतिरीश्वर ठाकुर मैथिली साहित्य के आदि कृतिकार थे । उनका **वर्णरत्नाकर** मैथिलीगद्य की प्रथम उपलब्ध कृति है । संस्कृत साहित्य में उनका नाम **धूर्तसमागम** एवं **पंचसायक** के लेखक के रूप में भी प्रसिद्ध है । इनमें पहला प्रहसन एवं दूसरा कामशास्त्र है । मनमोहन चक्रवर्ती के अनुसार उन्होंने **रंगशेखर** नामक एक अन्य ग्रंथ की भी रचना की थी ।[1] इस तरह संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित होने के बावजूद उन्होंने चौदहवीं सदी ई. के पूर्वाद्ध में **वर्णरत्नाकर** की रचना लोक-भाषा मैथिली में की । डा. शैलेन्द्र मोहन झा के अनुसार **धूर्तसमागम** का एक ऐसा हस्तलेख प्राप्त हुआ है जिसमें मैथिली गीतों का भी समावेश है । इससे ऐसा लगता है कि जिस प्रकार **वर्णरत्नाकर** की रचना कर उन्होंने लोक भाषा-गद्य का प्रवर्त्तन किया उसी प्रकार **धूर्तसमागम** से लोकभाषा-नाट्य परम्परा का भी सूत्रपात किया ।[2] **वर्णरत्नाकर** की पाण्डुलिपि, जो रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता में सुरक्षित है, का प्रथम कल्लोल खण्डित है । इस ग्रन्थ में मिथिला का तत्कालीन भौगोलिक दशा का विस्तार से उल्लेख मिलता है किन्तु इसके लिए किसी निश्चित सीमा का संकेत नहीं मिलता है । भौगोलिक इतिहास जानने के लिए सर्वप्रथम ऐतिहासिक स्थलों या नगरों की जानकारी करना आवश्यक होता है किन्तु **वर्णरत्नाकर** के नगर वर्णन सम्बन्धी कल्लोल खंडित होने के कारण इस पर प्रकाश डालना कठिन है । ज्योतिरीश्वर ने तीर्थों, नदियों, नावों, तालाब, वन, उपवन, वन्य-प्राणि, पशु, पक्षी, जल-प्राणि आदि का विस्तृत वर्णन उपस्थापित किया है ।

ज्योतिरीश्वर ने मिथिला को एक तीर्थ के रूप में उल्लेख किया है ।[3] अनेक ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन साहित्यों में मिथिला का उल्लेख विदेह राज्य की राजधानी के रूप में किया गया है ।[4] *जातकों* के अनुसार विदेह राज्य का विस्तार 300योजन या 900 मील था जिसमें 16000 गाँव थे ।[5] मिथिला नगरी की परिधि सात योजन थी[6] तथा अंग की राजधानी चंपा से इसकी दूरी साठ योजन थी ।[7] आधुनिक बलिराजगढ़ (मधुबनी) से प्राचीन मिथिला नगर की तुलना करना युक्तिसंगत जान पड़ता है किन्तु ज्योतिरीश्वर के समय में मिथिला नाम का कोई नगर नहीं था । सम्पूर्ण प्राचीन विदेह राज्य को मिथिला कहा गया

है । इसे तीरभुक्ति भी कहा जाता था जिसका विस्तार पूर्व में कोशी नदी से पश्चिम में सदानीरा या गंडक तक तथा उत्तर में हिमालय पर्वत या नेपाल की तराई से दक्षिण में गंगानदी तक था । ज्योतिरीश्वर ने इस क्षेत्र के लिए तिरहुति नाम का प्रयोग किया है ।[8] भौगोलिक दृष्टि से मिथिला क्षेत्र को 25°28' तथा26°52' उत्तरी अक्षांश एवं 84°26' तथा 86°46' देशान्तर के मध्य माना गया है ।[9]

कोकामुख नामक तीर्थ का भी **वर्णरत्नाकर** में उल्लेख मिलता है ।[10] **महाभारत**[11] तथा पुराणों में कोकामुख का उल्लेख मिलता है । **ब्रह्मपुराण** में कोकामुख को न केवल एक महान तीर्थ कहा गया है बल्कि इसे भगवान विष्णु के वाराह अवतार भी कहा गया है ।[12] **वराह पुराण** में कोकामुख तीर्थ को कोका एवं कौशिकी दो नदियों से संबद्ध किया गया है । भारतवर्ष के अनेक भागों में कौशिकी नदी का उल्लेख मिलता है किन्तु वाराह क्षेत्र के निकट जो कौशिकी नदी थी वही कोका नदी (कोशी) है । नेपाल में इसे सुवर्ण कौशिकी कहा जाता है । इस प्रकार प्राचीन कोकामुख तीर्थ या वाराह क्षेत्र सुवर्ण कौशिकी नदी के तट पर अवस्थित था यह काठमांडू से 124 मील दक्षिण-पूर्ण में स्थित था जिसका अक्षांश 26°57' एवं देशान्तर 87°4' है । मिथिला के लोगो को आज भी वाराह क्षेत्र के लिए बड़ा आदर है ।

कम्पकारण्य (चम्पकारण्य) नामक तीर्थ का ज्योतिरीश्वर ने उल्लेख किया है ।[13] **शक्ति संगम तंत्र**[14] में चम्पकारण्य को प्राचीन विदेह राज्य, जो बाद में तीरभुक्ति कहा गया, को गंडकी नदी के तट पर स्थित बताया गया है । डी. सी. सरकार ने इस चम्पकारण्य की समता आधुनिक चम्पारण से की है ।[15] अतः चम्पकारण्य मिथिला या तिरहुति के पश्चिमी-उत्तरी सीमा पर अवस्थित माना गया है ।

मिथिला की चार नदियों का उल्लेख ज्योतिरीश्वर ने किया है, ये हैं-गंगा, गंडकी, कौशिकी एवं वाग्वती ।[16] गंगानदी 30°55' उत्तर और 79°7' पूर्व को हिमालय पर्वत से गंगोत्री के निकट निकलती है जिसकी ऊँचाई समुद्र की सतह से 13,800 फीट ऊपर है ।[17] यह नदी मिथिला क्षेत्र को पश्चिम में गंडक नदी से पूर्व में वटेश्वर स्थान के निकट कोशी नदी तक स्पर्श करती है । महाकाव्यों में गंगा नदी को हिमालय की पुत्री कहा गया है ।[18] **रामायण** के अनुसार गंगा गहड़वाल के पर्वतों में गंगोत्री से निकलती है[19] किन्तु महाभारत[20] के अनुसार यह बद्रिकाश्रम से निकलती है । कुछ पुराणों के अनुसार गंगा की मुख्यधारा अलकनन्दा है जो बद्रीनाथ मन्दिर के निकट बद्रिकाश्रम से निकलती

है ।[21] मिथिला की अन्य विनाशकारी नदियों की भाँति गंगानदी के स्वरूप में कोई खास परिवर्तन की सूचना नहीं मिलती है । **जातकों** 22 से हमें सूचना मिलती है कि चम्पा नामक नगर गंगा एवं चम्पानदी के संगम पर अवस्थित था किन्तु आधुनिक काल में गंगा चम्पा या चम्पानगर से कुछ ही उत्तर से होकर बहती है ।

गण्डक नदी नेपाल के मध्य पर्वत से 27°27' उत्तर एवं 83°56' पूर्व में निकलती है ।[23] जहाँ यह सप्तगंडकी के नाम से जानी जाती है । **वाराह पुराण** में इस नदी की उत्पत्ति विष्णु से माना गया है तथा इसे शालग्रामी और नारायणी कहा गया है ।[24] **शतपथ ब्राह्मण**[25] में सदानीरा नदी का उल्लेख किया गया है जिसकी समता गंडकी नदी से की गई है । **महाभारत**[26] में भी भीम द्वारा पूर्वी क्षेत्रों के विजय के क्रम में इस नदी का जिक्र मिलता है । **रामायण** में इस नदी का उल्लेख नहीं मिलता है किन्तु कालिमाहि नदी का इसमें उल्लेख मिलता है जिसकी समता इस नदी से की जा सकती है । इस प्रकार गंडकी (गंडक) नदी नेपाल की पहाड़ी से निकलकर 192 मील सतह पर चलकर 25°41' उत्तर और 85°12' पूर्व में पटना के सामने गंगानदी में मिल जाती है ।[27] ज्योतिरीश्वर ने कौशिकी नदी का उल्लेख किया है । इस नदी का उल्लेख सर्वप्रथम **रामायण**[28] में मिलता है जिसमें इसे विश्वामित्र की बहन बताया गया है । **महाभारत**[29] के अनुसार भीम ने कौशिकी कच्छ के एक राजा को परास्त किया था । **मार्कण्डेय पुराण** से विदित होता है कि यह हिमालय से निकलती है ।[30] **वाराहपुराण, पद्मपुराण** एवं जातक में भी इस नदी का उल्लेख मिलता है ।[30A] **कालिकापुराण**[31] में इसे महाकौशिकी कहा गया है । कामरूप के राजा भास्करवर्मन के निधनपुर राजपत्र में भी इस नदी का उल्लेख है ।[32] भारत की प्राचीन बड़ी नदियों में कौशिकी आधुनिक कोशी भी एक है जो पूर्वी नेपाल के हिमालय से 26°27' उत्तर और 87°6' पूर्व में निकलती है ।[33] इसके उद्‌गम स्थल को सप्तकौशिकी भूमि के नाम से जाना जाता है । होडसन[34] महोदय का कहना है कि सात धाराओं के मिलने से कोशी नदी बनी है, ये धाराएं हैं- 1. मिलान्चि, 2. भोतिया कोशी, 3. तम्बा कोशी, 4. लिक्खु कोशी, 5. दूध कोशी, 6. अरूण एवं 7. तमूर । कोशीनदी सर्वप्रथम दक्षिण पश्चिम की ओर लगभग 96 कि. मी. तक चलकर दक्षिण एवं दक्षिणपूर्व की ओर लगभग 256 कि. मी. तक चलती है तथा बायीं किनारे से दो बड़ी नदियाँ अरूण एवं तम्बार को अपनी धारा में सम्मिलित करती है । यह वाराह क्षेत्र में पहाड़ को छोड़ती हुई 26°44' उत्तर एवं 87°6' पूर्व में बहती है । इसकी दक्षिणमुखी धारा सुपौल जिला के उत्तर पश्चिमी भाग से 26°35' उत्तर और 87°5' पूर्व में बहती है जहाँ इसका

विस्तृत स्वरूप 1 मील चौड़ा परिलक्षित होता है । यहाँ इसकी धारा त्रिभुजाकार भूमि बनाती है । यहाँ से यह दक्षिण की ओर अनेक शाखाओं में बँटती तथा एक दूसरे को समेटती हुई खगड़िया एवं सहरसा जिले को पार करती हुई चलती है और अपनी बायीं किनारे से धूगरी नदी को लेती हुई अंततः मनिहारीघाट पर गंगानदी से 25°22' उत्तर एवं 87°7' पूर्व में मिल जाती है ।[35] इस तरह यह मिथिला में लगभग 135 कि. मी. की दूरी तय करती है ।

वर्णरत्नाकर में वाग्वती नदी का भी उल्लेख किया गया है । **वृहद्विष्णुपुराण** के मिथिला खण्ड में भी वाग्वती नदी का उल्लेख मिलता है।[36] **मज्झिमनिकाय**[37] में बाहुमती नदी का उल्लेख मिलता है जिसकी समता आधुनिक बागमती नदी से की गई है ।[38] **स्वयंभू** एवं **वराहपुराण** में बागमती नदी का उल्लेख मिलता है।[39] ज्योतिरीश्वर के परवर्त्ती मैथिल विद्वान विद्यापति ठाकुर ने इस नदी का उल्लेख वाघवती के रूप में किया है ।[40] बौद्ध ग्रन्थ **उदान**[41] में विदित है कि वग्गुमुदा नदी वज्जिप्रदेश के पूर्वी भाग मे बहती थी जिसकी समता आधुनिक बागमती नदी से की गई है । बागमती नदी हिमालय के निचली भाग से निकलती है तथा सीतामढ़ी एवं दरभंगा जिले को पार करती हुई समस्तीपुर जिले के रोसड़ा के पास तिरमोहानी घाट पर बूढ़ी गंडक में मिल जाती है । इस तरह अब यह बूढ़ी गंडक के साथ गंगा में मिल जाती है ।

किसी भी क्षेत्र की भौगोलिक स्वरूप जानने के लिए उसके मार्गों एवं संचार व्यवस्था को जानना अत्यावश्यक हो जाता है । ज्योतिरीश्वर ने स्थलमार्गों तथा यातायात के साधन का उल्लेख नहीं किया है किन्तु गजवाहक, अश्ववाहक आदि का उल्लेख मिलता है जिससे स्पष्ट होता है कि सवारी के रूप में हाथी एवं घोड़ों का उपयोग होता था । वर्षाऋतु के वर्णन के क्रम में कहा गया है कि पथिकों को आवागमन में असुविधा होती थी, तीर्थ स्थान अगम्य हो जाता था तथा विदेशियों को विलम्ब हो जाता था ।[42] निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सड़कें कच्ची रही होंगी जो अनेक स्थानों पर नदियों से मिलती होगी । वर्षा के पानी से सड़कें कीचड़ से भर जाती होंगी तथा नदियों में पानी भर जाने के कारण इसे पार करना दुष्कर हो जाता होगा । मिथिला क्षेत्र में प्राचीन काल से ही अनेक नदियाँ बहती रही है जिससे यहाँ नदियों का जाल सा बन गया है । मुख्यतः नदियों का ही मार्ग के रूप में उपयोग होता रहा है यही कारण है कि ज्योतिरीश्वर ने अनेक प्रकार के नावों का उल्लेख किया है, ये नाव थे[43] –चाड, चडक, भोपाल, वेश, सरङ्गा, झामट, कास, वृन्दावन, पतकुली, पटोरा, भोनाह, डोङ्गी, धयानी, पषिआरी, नओल, गरूडा[44], बरहिया[45], सोरहिया[46], बिसहथी[47], बइसा[48], पञ्चिसा[49], अठइसा[50], सिंहमुखी[51] व्याघ्रमुखी[52], घोटकमुखी[53],

हंसमुखी[54], नागफनी[55], मछतनी[56], एकठा आदि । नाव चलाने के लिए पतवार, डाण्ड, करूआल, बाँस आदि का उपयोग होता था तथा नाव से पानी निकालने के लिए सेउति[57] का उपयोग होता था । सैनिक बड़े नावों में युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र ले जाते थे । संभवतः व्यापारिक कार्यों में भी इन्हीं नावों का उपयोग होता होगा । इस प्रकार जलमार्गों में यातायात के साधन के रूप में डोङ्गी जैसे छोटे नाव से लेकर अठइसा जैसे बड़े नावों तक का उपयोग किया जाता था ।

वनों एवं वन्यप्राणियों के विषय में भी ज्योतिरीश्वर ने उल्लेख किया है । वन में अनेक प्रकार के वृक्ष होते थे[58], यथा–ताल[59], तमाल[60], हिन्ताल[61], शाल[62], पियाल[63], पितशाल[64], शमी[65], सरल[66], शल्लकी[67], सिरिसि[68], सिम्बलि[69], सिद्ध[70], सिंसप[71] सहोल[72], सोहिजन, पिप्पल[73], पलाश, पाउलि[74], पनस[75], प्रियङ्ग[76], वेल, वकुल[77], बउहर[78], बंझि[79], बहेलि[80], बदर[81], वानीर[82], कदम्ब, कर्ण्णिकार[83], कोविदार[84], काञ्चनाल[85], करहि[86], कम्पिल्ल, कङ्केल्लि[87], कुञ्झक, अर्क्क[88]F, खदिर[89], दुर्व्वा, अश्वत्थ[90], अपामार्ग,[91] उदम्बर, चन्दन आदि । वनस्पति से औषधि बनायी जाती थी । औषधि के लिए मुख्यतया इजर, बेल, बएर[92], बाबुर[93], बरूण[94], बकाइन[95] एवं कातर आदि का प्रयोग किया जाता था ।[96] अनेक प्रकार के जंगली जानवरों तथा पशुओं का वर्णन भी मिलता है,[97] यथा– हरिण, सूअर[98], सिंह, शाहूर्द्दूल, गवय[99], गण्डक[100], गज, महिष[101], भल्लूक[102], मृग, वराटी, नागुल, चीतर, चउसिङ्ग, मण्डषोस, झंषार, घोरा, रोहल, शाखामृग, गिरिछ[103], अजगल, गोलाङ्गल[104] गोमायु[105], शिवा[106], घोड़ा, गाय आदि । जंगलों में ऋषियों के आश्रमों का भी उल्लेख मिलता है जिसकी पुष्टि प्राचीन साहित्यों से भी होती है । ज्योतिरीश्वर ने जंगल में निवास करने वाले मनुष्य के अनेक जातियों का भी वर्णन किया है,[107], यथा-कोच किरात[108], कोल्ह, भिल, षस, पुलिन्द, सचवर, छैरङ्ग, म्लेछ, गोण्ठ, वोट, नेट, पहलिया[109], पोध, दोनवार, सागर, वान्तर आदि । उन्होंने इन वनवासियों को म्लेच्छ की संज्ञा दी है । जंगल के पक्षियों का भी वर्णन मिलता है,[110] यथा-श्येन[111], शुक[112], सारिका[113], पाण्डु[114], पारावत[115], मयूर,[116], तित्तिल[117], हरीत, कराल, कोकिल[118], चकोर, जीव, सारी[119], कपोत[120], करङ्गु, कपिञ्जल,[121], विद्राङ्ग, शिखण्डी[122], महाशुक, नील[123], नीलग्रीव,[124], खञ्जन,कङ्कारी, हंस, कलहंस, सरालि, सिन्धु, कोयष्टि[125], कारण्डव[126], कुकुल, खएर, आञ्जन, मारापालि, वक, पुण्डेरि, चक्रवाक, कौशिक,[127] काकोल[128], वायस[129], गरूड, सारस[130] आदि ।

हंसमुखी[54], नागफनी[55], मछतनी[56], एकठा आदि । नाव चलाने के लिए पतवार, डाण्ड, करूआल, बाँस आदि का उपयोग होता था तथा नाव से पानी निकालने के लिए सेउति[57] का उपयोग होता था । सैनिक बड़े नावों में युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र ले जाते थे । संभवतः व्यापारिक कार्यों में भी इन्हीं नावों का उपयोग होता होगा । इस प्रकार जलमार्गों में यातायात के साधन के रूप में डोङ्गी जैसे छोटे नाव से लेकर अठइसा जैसे बड़े नावों तक का उपयोग किया जाता था ।

वनों एवं वन्यप्राणियों के विषय में भी ज्योतिरीश्वर ने उल्लेख किया है । वन में अनेक प्रकार के वृक्ष होते थे[58], यथा–ताल[59], तमाल[60], हिन्ताल[61], शाल[62], पियाल[63], पितशाल[64], शमी[65], सरल[66], शल्लकी[67], सिरिसि[68], सिम्बलि[69], सिद्ध[70], सिंसप[71] सहोल[72], सोहिजन, पिप्पल[73], पलाश, पाउलि[74], पनस[75], प्रियङ्ग[76], वेल, वकुल[77], बउहर[78], बंझि[79], बहेलि[80], बदर[81], वानीर[82], कदम्ब, कर्णिकार[83], कोविदार[84], काञ्चनाल[85], करहि[86], कम्पिल्ल, कङ्केल्लि[87], कुञ्झक, अर्क्क[88]F, खदिर[89], दुर्व्वा, अश्वत्थ[90], अपामार्ग,[91] उदम्बर, चन्दन आदि । वनस्पति से औषधि बनायी जाती थी । औषधि के लिए मुख्यतया इजर, बेल, बएर[92], बाबुर[93], बरूण[94], बकाइन[95] एवं कातर आदि का प्रयोग किया जाता था ।[96] अनेक प्रकार के जंगली जानवरों तथा पशुओं का वर्णन भी मिलता है,[97] यथा– हरिण, सूअर[98], सिंह, शाहूर्द्दूल, गवय[99], गण्डक[100], गज, महिष[101], भल्लूक[102], मृग, वराटी, नागुल, चीतर, चउसिङ्ग, मण्डषोस, झंषार, घोरा, रोहल, शाखामृग, गिरिछ[103], अजगल, गोलाङ्गल[104] गोमायु[105], शिवा[106], घोड़ा, गाय आदि । जंगलों में ऋषियों के आश्रमों का भी उल्लेख मिलता है जिसकी पुष्टि प्राचीन साहित्यों से भी होती है । ज्योतिरीश्वर ने जंगल में निवास करने वाले मनुष्य के अनेक जातियों का भी वर्णन किया है,[107], यथा-कोच किरात[108], कोल्ह, भिल, षस, पुलिन्द, सचवर, छैरङ्ग, म्लेछ, गोण्ठ, वोट, नेट, पहलिया[109], पोध, दोनवार, सागर, वान्तर आदि । उन्होंने इन वनवासियों को म्लेच्छ की संज्ञा दी है । जंगल के पक्षियों का भी वर्णन मिलता है,[110] यथा-श्येन[111], शुक[112], सारिका[113], पाण्डु[114], पारावत[115], मयूर,[116], तित्तिल[117], हरीत, कराल, कोकिल[118], चकोर, जीव, सारी[119], कपोत[120], करङ्गु, कपिञ्जल,[121], विद्राङ्ग, शिखण्डी[122], महाशुक, नील[123], नीलग्रीव,[124], खञ्जन,कङ्कारी, हंस, कलहंस, सरालि, सिन्धु, कोयष्टि[125], कारण्डव[126], कुकुल, खएर, आञ्जन, मारापालि, वक, पुण्डेरि, चक्रवाक, कौशिक,[127] काकोल[128], वायस[129], गरूड, सारस[130] आदि ।

वनों के साथ-साथ ज्योतिरीश्वर ने उपवनों का भी वर्णन किया है ।[131] उपवन में मुख्यतया गुआ[132], नरङ्ग[133], नागकेसर, नमेरू,[134] खीरी, बउर[135], उतति[136], दाष[137], दालिम्ब[138], छोलङ्ग[139], करूण[140], चम्पक[141], चन्दन, लवङ्ग,[142] अशोक आदि के पेड़-पौधों का वर्णन आता है। अन्य फलों में अगर[143], तेन्दु[144], तिलक[145], जम्बीर[146], जम्बु[147], कटहर, ककोला,[148] एला[149], सुखमेलं[150], तमाल, सरल, मधुकर[151], स्वच्छ[152], कुन्त[153], माधवी[154], कनक कदली, कम्पूर कदली, रामकदली, कदली आदि पेड़ों का वर्णन मिलता है । फूलो में मालती, मनञोदा, लेवारि[155], करूण, सुवर्ण्णकितकी, चम्पक, श्वेतपङ्कज, मरूआ[156], कनैल आदि के वर्णन के साथ-साथ वैंत, कुश आदि का भी उल्लेख मिलता है ।

वर्णरत्नाकर में सरोवर का विवरण भी मिलता है जिससे स्पष्ट होता है कि मध्यकाल से ही मिथिला में सरोवर उत्खनन का महत्व बढ़ गया था साथ ही मछली पालने की प्रवृत्ति का भी विकास हो गया था जो आज भी विद्यमान है । सरोवर में कमल, कोकनद, कल्हार, कुवलय, कुमुद आदि पुष्पों के साथ-साथ अनेक प्रकार के मछलियों तथा अनेक जीव-जन्तुओं का उल्लेख मिलता है । मछलियों में वाउसि, वसाढ़, वोआर, वचा, वामु, अरि, भोञे, कोन्धु, नयना नायर, सौर, मिलिन्धि, सफरी आदि प्रमुख थीं तथा अन्य जीव-जन्तुओं में वलबलायमान, मङ्गर, सोह[157], सङ्कुच, कछुआ, कच्छप, सकतर, ठोड, उशुया, पतकाछु, छलियार, संसु, उद, नक्र[158], कमल, कम्भीर आदि का विवरण मिलता है । इनके अलावा पोखरे से संबद्ध अनेक पशु-पक्षियों का भी जिक्र मिलता है ।

तत्कालीन कृषि-व्यवस्था पर भी प्रकाश मिलता है । हेमन्त वर्णन के क्रम में धान की कटाई तथा नये अन्न के प्रचार का उल्लेख मिलता है [159]जिससे स्पष्ट होता है कि उसकाल में मुख्यतया शालि या धान की खेती होती थी । अन्य अन्नों में[160] यव, गोधूम,[161] नीवार[162], चरण[163], देवधान्य[164], कङ्गु,[165] श्यामाक[166] आदि को सप्तधान्य की संज्ञा दी गई है । हल्दी एवं साँकर[167] की भी खेती होती थी । ताम्बूल[168] को स्वर्गदुर्ल्लभ कहा गया है जिससे स्पष्ट होता है कि पान की भी खेती होती थी । इस प्रकार की मान्यता आज भी मिथिला में विद्यमान है । सिंचाई-व्यवस्था मुख्यतः वर्षा पर आधारित थी किन्तु नदियों की बहुलता से इस कार्य में अधिक लाभ मिलता रहा है । मुख्य नदियों से छोटी-छोटी नहरें निकाल कर सिंचाई कार्य किया जाता था । छोटे-छोटे नाले धीरे-धीरे नदियों का स्वरूप ग्रहण करती गये और सम्पूर्ण मिथिलांचल में नदियों का जाल सा बन गया । सरोवर एवं पोखरों के वर्णन से स्पष्ट होता है कि उस काल में इनकी बहुलता थी । वर्षा के अभाव में सिंचाई के लिए इनका भी प्रयोग होता रहा होगा ।

इस तरह **वर्णरत्नाकर** से तत्कालीन मिथिला की भौगोलिक स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश पड़ता है । यद्यपि प्रथम कल्लोल खण्डित होने से नगर वर्णन, जो भूगोल के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, से हम वंचित रह जाते है तथा मार्गों पर भी विशेष प्रकाश नहीं डाला गया है फिर भी यह एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें लगभग सभी पहलुओं, यथा-राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, शैक्षणिक, भौगोलिक, धार्मिक, कलात्मक, सांस्कृतिक, शृङ्गारिक आदि पर विस्तार से वर्णन मिलता है । पर्यावरण के महत्व को भी इसमें दर्शाया गया है । इस प्रकार ज्योतिरीश्वर की यह अनुपम एवं अपूर्व कृति है जिसमें विविध बिन्दुओं का गंभीरतापूर्वक विवेचन हुआ है ।

●

संदर्भः–

*. बिहार रिसर्च सोसायटी संग्रहालय भवन, पटना ।

1. *जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल*, कलकत्ता, 1915, पृ. 414.
2. शैलेन्द्र मोहन झा, *ज्योतिरीश्वर*, पटना, 1983, पृ-1.
3. **वर्णरत्नाकर,** (सं.) सुनीति कुमार चटर्जी एवं बबुआजी मिश्र, कलकत्ता, 1940, 66 क ।
4. **महाभारत,** पूना, 1929-1933, वनपर्व, 254; **महावस्तु,** (सं.) ई. सेनार्ट, 3 भाग, पेरिस, 1889-1897, **III,** 172; **रामायण,** वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पन्सिकार, बंबई, 1930, **I**, 49, 9–16; **दिव्यावदान,** ई. वी. कॉवेल एण्ड ए० नील, कैम्ब्रिज, 1886, 424.
5. **जातक** , वी. फौसबॉल, 7 भाग, लंदन, 1877-1897, **IV**, 316.
6. *वही*, **III,** 365.
7. वही, **VI** , 32.
8. **वर्णरत्नाकर,** 28 ख।
9. **इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया,** 8,1907, 187.
10. **वर्णरत्नाकर,** 65 ख ।
11. **महाभारत III,** 48,158; **XIII,**25,52.
12. **ब्रह्मपुराण,** आनंदाश्रम ग्रन्थावलि, पुना, 1895, 119, 17-116; **वराह पुराण,** हृषीकेश शास्त्री, कलकत्ता, 1893, 140, 4-5:
    तव कोकामुखं नाम यन्मया पूर्व भाषितम् । ;.
    119,17: कोकेति प्रथिता लोके शिशिराद्रि समाश्रिता ।; 119,106;116; डी. सी. सरकार, **स्टडीज इन द ज्योग्राफी ऑफ एन्सिएण्ट एण्ड मेडियेवल इण्डिया,** दिल्ली, 1971, 277.
13. **वर्णरत्नाकर,** 65 ख ।

14. **शक्तिसंगमतंत्र, VIII,** 27: गंडकीतीरमारभ्य चम्पारण्यान्तकं शिवे । विदेह भूः समाख्याता तैरभुक्त्यमिधः सतु ॥; सरकार, **पूर्वोक्त,** 84.
15. सरकार, ***पूर्वोक्त,*** 101.
16. ***वर्णरत्नाकर,*** 66क एवं 66ख ।
17. ***इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया,*** I, 1909, पृ०-204-210.
18. ***रामायण*, I,** 42; **V,** 23; **महाभारत,** अनुशासन पर्व, 26.
19. पूर्वोक्त, I,42; V, 23.
20. **महाभारत,** वनपर्व, 142.
21. **मार्कण्डेय पुराण**, सं. के. एन. बनर्जीया, कलकत्ता, 1862, 56; कूर्मपुराण, नीलमणि मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1890, 1,46; वराह पुराण, 82.
22. जातक, II,454-68.
23. **इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया**, VI, 1909,214-15.
24. **वराह पुराण**, I44.
25. **शतपथ ब्राह्मण**, सं. चन्द्रधर शर्मा एवं वंशीधर मिश्र गौड़, २ वाल्युम, बनारस, 1937-1940, I, 4. 1. 17.
26. **महाभारत**, III, ,84,114.
27. **इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया,** I,1909,214-15.
28. **रामायण**, I,34.6-11: कुशवंश प्रसूतोस्मि कौशिकी सरितां वरा ॥
29. **महाभारत**, II 30,22;110,20-22.
30. **मार्कण्डेय पुराण**, 57.

30A **वाराह पुराण**, 140; पद्मपुराण, 21; जातक, V, 2.

31. **कालिका पुराण**, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, 14, 14; 14, 31.
32. **इपीग्राफिया इण्डिका**, XII, 65; XIX, 115.
33. **इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया**, I, 1909, 215-16.
34. ज. ए. सो. बं. , 1849, पार्ट-II, 646-49.
35. **इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया,** I, 1909, 215-16.
36. श्याम नारायण सिंह, हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, कलकत्ता, 1922,4.
37. **मज्झिमनिकाय**, वी. ट्रेंक्नर एण्ड आर. काल्मर्स, 3वाल्युम, पा. टे. सो. लंदन, 1888.-1902 I 39.
38. बी. सी. लॉ, **हिस्टोरिकल ज्योग्राफी ऑफ एन्शिएन्ट इण्डिया**, दिल्ली, 1976, 70.
39. **स्वयम्भू पुराण**, 5; वराहपुराण, 215.
40. **पुरूष परीक्षा**, लब्धसिद्धि कथा, पद्य-1.
41. उदान, पी. स्टेन्थल, पा. टे. सो. लंदन, 1885, III, 3.
42. **वर्णरत्नाकर,** 33ख ।
43. *वही*, 75 ख ।
44. गरूड जैसे मुखवाले नाव ।
45. बारह हाथ लम्बा नाव ।
46. सोलह हाथ लम्बा नाव ।

47. बीस हाथ लम्बा नाव ।
48. बाइस हाथ लम्बा नाव ।
49. पच्चीस हाथ लम्बा नाव ।
50. अट्ठाइस हाथ लम्बा नाव । इस तरह विभिन्न प्रकार की लम्बाई वाले नावों का प्रयोग आवश्यकतानुसार होता था । कम लोगों को नदी पार करना रहता था तो कम लम्बाई वाले नाव तथा अधिक लोगों को पार करने के लिए बड़ी नावों का उपयोग होता था ।
51. इस प्रकार के नाव का दोनों सिरा शेर के शिर जैसा बना होता था ।
52. बाघ के शिर आकार वाला नाव ।
53. घोड़ा के मुख के आकार वाला नाव ।
54. हंस के मुख के आकार वाला नाव ।
55. नाग के फन के समान सिरा वाला नाव ।
56. मछली के आकार वाला नाव । इतने प्रकार के नावों के उल्लेख से तत्कालीन मिथिला के कारीगरों की कुशलता तथा विकसित कला का संकेत मिलता है । साथ ही यह आर्थिक सम्पन्नता का भी द्योतक है ।
57. एक बर्तन विशेष ।
58. **वर्णरत्नाकर**, 49ख; 54ख; 23ख ।
59. ताड़ का पेड़ ।
60. वरूण वृक्ष या काला खैर ।
61. एक प्रकार का जंगली खजूर ।
62. सखुआ का पेड़ ।
63. चिरौंजी का पेड़ ।
64. पीला सखुआ ।
65. छेंकुर का पेड़ ।
66. पीतदारू वृक्ष ।
67. सलई नामक वृक्ष जो हाथियों का प्रिय होता है ।
68. सिरस या शीशम की तरह का लम्बा एक प्रकार का ऊँचा पेड़ ।
69. सेमल ।
70. सिन्धु या सिन्धुवार वृक्ष ।
71. शीशम ।
72. सहोर या जंगली पेड़ ।
73. पीपल ।
74. पाँड़लि या पॉड़रि ।
75. कटहल के पेड़ ।
76. बड़ी पीपल या राई ।
77. मौलिसरी का पेड़ ।
78. बड़हर का पेड़ ।
79. बाँझी ।
80. बहेड़ा ।

81. बेर का पेड़ ।
82. पाकर वृक्ष ।
83. एक प्रकार का अमल तास ।
84. कचनाड़ का पेड़ ।
85. कचनाड़ का पेड़ ।
86. सफेद सिरिस का पेड़ ।
87. अशोक वृक्ष ।
88. अकौआ वृक्ष ।
89. कत्थे का पेड़ ।
90. पीपल का पेड़ ।
91. चिचड़ा ।
92. बदरी फल
93. बबूर ।
94. बरूना पेड़ ।
95. बकायन या महानिंव ।
96. **वर्णरत्नाकर**, 10 ख ।
97. *वही*, 49 ख ।
98. कोल ।
99. नील गाय का नर ।
100. गैड़ा ।
101. भैंसा ।
102. भालू ।
103. ऋछ या भालू ।
104. वानर विशेष ।
105. सियार; **वर्णरत्नाकर**, 30 ख ।
106. गिदरनी; *वही*, 31 ख ।
107. *वही*, 50 क
108. कोल किरात ।
109. आदिवासी जाति पहालिया ।
110. **वर्णरत्नाकर**, 49ख, 50ख, 51क, 47ख, 52क, 30ख, 31ख, 42ख ।
111. बाज ।
112. सुग्गा या तोता ।
113. मैना जाति की चिड़िया ।
114. पण्डुक ।
115. कबूतर ।
116. मोर ।
117. तीतीर पक्षी ।
118. कोयल ।

119. मैना ।
120. कबूतर ।
121. तीतीर पक्षी ।
122. सिखण्डिन मुर्गा ।
123. मैना ।
124. नीलकंठ ।
125. एक पक्षी जो पानी के ऊपर उड़ा करता है ।
126. एक प्रकार का हंस या बत्तख ।
127. उल्लू।
128. काला कौआ ।
129. कौआ ।
130. हंस जाति का एक लंबी टांगों वाला पक्षी ।
131. **वर्णरत्नाकर**, 50क, 50ख, 51क।
132. सुपाड़ी ।
133. नारंगी ।
134. रूद्राक्ष ।
135. मौलिसरी ।
136. तूत ।
137. दाख या अंगूर नामक लता और उसका फल ।
138. अनार ।
139. छहोरा ।
140. वरूण ।
141. चम्पा का पेड़ ।
142. लौंग ।
143. अगरू का पेड़ ।
144. आबनूस ।
145. लोध का पेड़ ।
146. जभीरी का वृक्ष ।
147. जामुन का पेड़ ।
148. कङ्कोल ।
149. इलायची ।
150. छोटा इलायची ।
151. मधुक या महुए का वृक्ष ।
152. बेड़ का पेड़ ।
153. चमेली की जाति का पौधा ।
154. एक सुगंधित गुच्छेदार लाल फूलों वाली लता ।
155. नेवारि ।
156. एक प्रकार का पुष्प वृक्ष ।

157. गोह ।
158. घड़ियाल ।
159. वर्णरत्नाकर, 34 क ।
160. वही, 54 ख ।
161. गेहूँ ।
162. जलीय भूमि में अपने आप होने वाला धान या तीनी ।
163. चीनक ।
164. ज्वार ।
165. कँगनी नामक कदन्न ।
166. सावाँ नामक अनाज ।
167. ईख ।
168. पान, वर्णरत्नाकर, 28ख ।

VOLUME-VIII

PRAJÑĀ-BHĀRATĪ

THE JOURNAL OF THE K.P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE.

Dr. Vijay Chandra Prasad Chaudhary
Commemoration Volume

Chief Editor
C.P. Sinha



K.P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE, PATNA
INDIA
1997

॥ भूयात् प्रज्ञाभारतीय भूतये नमः ॥

Published under the patronage of the
Government of the State of Bihar

प्रज्ञा-भारती

अंक -*VIII*

वर्ष-*8*

PRAJÑĀ-BHĀRATĪ

Chief Editor
C.P. Sinha
Director
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna

Joint Editors
Dr. Jagdishwar Pandey
Research Fellow-Cum-Assistant Director,
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna.

Shri Bijoy Kumar Chaudhary,
Research Fellow-Cum-Assistant Director,
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna

Sri Vijoy Kumar
Research Fellow-Cum-Assistant Director,
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna

Dr. Anil Kumar,
Research Fellow-Cum-Assistant Director,
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna

Associate Editors
Dr. (Smt.) Atia Begam
Dr. Surendra Tiwari

**K.P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE,
PATNA
1997**

CONTENTS

●